Vol. 7, Issue 4, January 2018 ISSN 2249-894X

REVIEW OF RESEARCH

An International Multidisciplinary Peer Reviewed & Refereed Journal

Impact Factor: 5.2331

UGC Approved Journal No. 48514

Chief Editors
Dr. Ashok Yakkaldevi
Ecaterina Patrascu
Kamani Perera

Associate Editors
Dr. T. Manichander
Sanjeev Kumar Mishra

REVIEW OF RESEARCH

ISSN: 2249-894X
IMPACT FACTOR : 5.2331(UIF)
VOLUME - 7 | ISSUE - 4 | JANUARY - 2018

''बौध्द साहित्य में वर्णित सामाजिक जीवन – एक अध्यन विनय पिटक के संदर्भ में''

Dr. Suraj Kumar Suman
Researcher, History Department, B. N. Mandal University, Madhepura (Bihar) India.

सारांशः–
विनय पिटक एक बौद्ध ग्रंथ है। यह उन तीन ग्रंथों में से एक है जो त्रिपिटक बनाते है। इस ग्रंथ का प्रमुख विषय विहार के भिक्षु, भिक्षुणी आदि है। विनय पिटक का शाब्दिक अर्थ ''अनुशासन की टोकरी'' है। बौद्ध धर्म में भिक्षु और भिक्षुणी के रूप मे प्रवेश करने वाले शिष्य (अनुयायी) के आचरण व्यवस्थित करने के निमित्त निर्मित अनुशासन के नियमों को विनय कहते है। अतः विनय पिटक विनय से संबन्धित नियमों का व्यवस्थित संग्रह है।

सम्बध्द साहित्य का अर्थ

साहित्य से किसी भी समाज के तत्कालीन राजनीतिक व सांस्कृतिक इतिहास का बोध होता । सुष्टी की कोई भी वस्तु ऐसी नही है जिसका इतिहास से सम्बन्ध न हो, अतएव साहित्य इतिहास से असम्बद्ध नही है। साहित्य के इतिहास में हम प्राकृतिक घटनाओ व मानवीय क्रिया कलापो के स्थान पर साहित्यिक रचनाओं का अध्ययन ऐतिहासिक दृष्टी से करते है, वैसे, देखा जाए तो साहित्यिक रचनाएं भी मानवीय क्रिया कलापों से भिन्न नहीं है, अपितु वे विशेष वर्ग के मनुष्य की विशिष्ट क्रियाओं का सूचक है, दुसरे शब्दों में, साहित्यिक रचनाएं साहित्यकारों की सर्जनात्मक क्रियाओं और प्रवृत्तियों का सूचक होती है। किसी भी साहित्य की विकास–प्रक्रिया के अध्ययन के लिए सम्बन्धित निम्न पांच तत्वों पर विचार किया जाता है–

(क) सर्जन शक्ति
(ख) परम्परा
(ग) वातावरण
(घ) द्वन्द्व
(ड) सन्तुलन

वस्तुतः यह सिद्धांत सृष्टि की सामान्य विकास प्रक्रिया से सम्बन्धित है, संक्षेप में हम कह सकते है कि साहित्य के क्षेत्र में प्राकृतिक सर्जन शक्ति अर्थात साहित्यकार की नैसर्गिक प्रतिभा परम्परा (सांस्कृतिक एवं साहित्यिक परम्परा) और वातावरण (युगीन परिस्थितियों, प्रवृत्तियों तथा चेतना) के द्वन्द्व से प्रेरित होकर ही गतिशील रहती है जिसका चरम लक्ष्य द्वन्द्व के दोनों पक्षों में सन्तुलन स्थापित करना होता है। बोद्ध दर्शन भी तत्कालीन समाज की सांस्कृतिक एवं राजनितिक एवं सामाजिक स्थिति से प्रभावित है, बौद्ध धर्म ने तत्कालीन समाज की परिस्थितियों से प्रभावित होकर समाज के उन्नयन हेतु प्रयास किया।

ई.पू. पांचवी–छठीं शताब्दी से लेकर ग्यारहवीं–बारहवीं शताब्दी ई. तक बौद्ध धर्म और दर्शन का माना जाता है। बौद्ध साहित्य हमें निम्न दो भाषाओं में प्राप्त होता है–पालि और संस्कृत।

पाली–

भगवान ने संद्धर्म का उपदेश जनभाषा में दिया था जो मध्य मण्डल में बोली जाती थी। यह भाषा मागधी थी जो कालान्तर में 'पालि' नाम से अभिहित की गयी। बुद्धवचन इसी पालि भाषा में सुरक्षित है। ये बुद्धवचन, हमें उन

VOLUME - 7 | ISSUE - 4 | JANUARY - 2018

ग्रन्थ–समूहों में मिलते है, जिन्हें 'त्रिपिटक' (पालि–त्रिपिटक) कहा जाता है।

सम्पूर्ण त्रिपिटक पालि भाषा में उपलब्ध है। संस्कृत भाषा में भी बौद्धों ने त्रिपिटक की रचना की थी,परन्तु आज वह प्राप्य है। चीनी और तिब्बती अनुवादों से पता लगता है। त्रिपिटक का अर्थ है तीन पिटारियॉ – तीन महाग्रन्थ समूह, जिनमे बुद्धवचन निबद्ध है। कालान्तर में यह संग्रह ही त्रिपिटक की संज्ञा से विभूषित हो गया ये तीन पिटक है–सुत्त पिटक (सूत्र पिटक), विनय पिटक और अभिधम्म पिटक (अभिधर्म)। ये ग्रन्थ समूह ही प्रारम्भिक बुध्द धर्म और दर्शन के जानने के लिए मुलस्त्रोत है। तीन पिटक निम्नलिखित है–

1. सुत्त पिटक –

इस पिटक में गौतम बुध्द के सिध्दान्तों का पद्य और संवादों के रूप में संग्रह किया गया है। इसमें गद्य संवाद हैं, मुक्तक छनद हैं। प्राचीन छोटी – छोटी कहानियां, उपमाएं तथा उदाहरण तथा उदाहरण हैं। यह पिटक पांच निकायों में विभक्म है।

क) दीर्घ निकाय – दीर्घ निकाय 34 सुत्तों और 3 वर्गो में विभाजित है। सत्तों में बौध्द सिध्दान्तों – जैसे आर्यसत्य, मध्यममार्ग, प्रतीत्य समुत्पाद और निर्वाण की चर्चा अधिक है। कहीं – कहीं वर्ण व्यवस्था, तत्कालीन सामाजिक, आर्थिक, राजनैतिक और सांस्कृतिक स्थिति अथवा जाति आदि की उच्चता का मार्मिक खण्डन भी मिलता है। इन सुत्तों में बौध्द नीति एवं शील, सदाचार आदि चर्चा भी मिलती है।

ख) मज्झिम निकाय – इसमें 152 सुत्त हैं, 15 वर्गो में विभाजित हैं। इन सुत्तों में ब्राह्मण, यज्ञ, होम, योग के विधि स्वरूप, जैनाचार्य के साथ बुध्द का संवाद, तत्कालीन सामाजिक तथा राजनैतिक स्थिति, बौध्द धर्म के मूल चार आर्य सत्य, रूप, कर्म, पुनर्जन्म, सिध्दान्त, आत्मवाद का खण्डन भी मिलता है। ध्यान की अनेक विधियों आदि का सम्यक विवेचन मिलता है।

ग) संयुक्त निकाय – ऐसे सुत्तों का संग्रह जिसमें दार्शनिक समस्याओं का वर्णन अधिक पाया जाता है। इस निकाय में लगभग आठ हजार सुत्त हैं, किन्तु तीन हजार सुत्त ही प्राप्त होते हैं जो पांच वर्गो में विभक्त हैं।

घ) अंगुत्तर निकाय – इसमें अनेक धर्मो का विवेचन है। इसमें 2300 सुत्त है जो 11 वर्गों में विभक्त हैं। इन वर्गो को निपात कहते है जो संख्यात्मक श्रेणी से क्रमबध्द हैं। सभी निपातों में एकरूपता है। इन निपातों में बौध्द धर्म के सिध्दान्तों को संख्या के क्रम से निबध्द किया गया है।

ङ) खुध्दक निकाय – यह सुत्तपिटक का अन्तिम निकाय है जिसमें 15 ग्रन्थ संग्रहीत हैं। वे हैं –

1.खुद्दक पाठ	2. धम्मपद	3. उदान
4. इतिवुत्तक	5. सुत्त निपात	6. विमानवत्थु
7.पेतवत्थु	8. थेरगाथा	9. थेरीगाथा
10. जातक	11. निद्देस	12. पटिसम्भिदामग्ग
13. अपादान	14. बुध्दवंस	15. चरियापिटक

कभी कभी 'निद्देस' को चूल निद्देस और महानिद्देस दो पृथक ग्रन्थ मानकर 16 ग्रन्थों की गणना की जाती है।

2. विनयपिटक –

विनय पिटक में विनय – सम्बन्धी नियमों का संग्रह किया गया है। इसे बौध्द – भिक्षुकों का 'आचार – शास्त्र' भी कहा जा सकता है। इस महाग्रन्थ में भिक्षु – भिक्षुणियों के दैनिक कार्यकलापों से सम्बन्धित नियमों के उल्लेख मिलते हैं।

जिन्हें भगवान ने समय समय पर संघ संचालन को नियमित करने के लिए निर्देशों के रूप में दिया था। ये नियम तथा शिक्षाएं भगवान के समय में ही बन चुकी थी। ये नियम सं 227 हैं जो अनेक रूपों में बारम्बार बतलाए गए हैं। इन नियमों को विषयवस्तु की दृष्टि से तीन भागों अथवा ग्रन्थों में विभाजित किया गया है जो हैं –

1. सुत्त विभंग – पाराजिक, पाचित्य।
2. खन्धक – महावग्ग, चुल्लवग्ग।
3. परिवार।

VOLUME - 7 | ISSUE - 4 | JANUARY - 2018

3. अभिधम्म पिटक :

'अभिधम्म' का अर्थ है – विशिष्ट धर्म या अतिरेक धम्म। यह बौध्द धर्म का दर्शनिक पिटक है यद्यपि इसकी विषयवस्तु सुत्तपिटक से पर्याप्त साम्य रखती है, फिर भी 'अभिधम्मपिटक' की विषय को प्रस्तुत करने की अपनी शैली है। यह पिटक सात ग्रन्थों में मिलता है।

1. धम्म संगणि – इसमें विशेष रूप से चित्तचैतसिक (चित्तवृत्तियों) तथा अव्याकत धर्मो का विश्लेषण किया जाता है।
2. विभंग – इसमें भी चित्तवृतियों तथा बौध्द शब्दावली का वर्णन पाया जाता है।
3. धातुकथा – इसमें विभंग के अठराह विभागों में से केवल तीन भाग –स्कन्ध, आयतन एवं धातु का ग्रहण किया जाता है।
4. पुग्गलपत्र्जाति – पुग्गलपत्र्जाति में नैतिक दृष्टि से विकास को प्राप्त होने वाले बौध्द भिक्षुओं का वर्णन किया गया है तथा कई पुदगल भेद बतलाए गए हैं।
5. कथावस्तु – इसमें अष्टादश निकायों के विभिन्न मतों का खण्डन कर स्थविरवाद की स्थापना की गई है।
6. यमक – इसमें युगल रूप में बौध्द सिध्दान्तों का वर्णन किया गया है।
7. पट्ठान – पट्ठान में 24 प्रत्ययों की दृष्टि से प्रतीत्य समुत्पाद का वर्णन किया गया है।

अनुपिटक साहित्य –

इसके अतिरिक्त अनुपिटक साहित्य भी मिलता है जो बौध्द धर्म के अध्ययन के लिए त्रिपिटक के बाद रचा गया है। अनुपिटक साहित्य को तीन भागों में विभक्त किया है –

(क) पूर्वबुध्दघोष – युगीन साहित्य – इसमे 1. नेत्तिपकरण 2. पेटकोपदेश 3. मिलिन्दप्रश्न और 4. दीपवंश आदि सम्मिलित है।

(ख) बुध्दघोष – युग का साहित्य – बुध्दघोष युगीन साहित्य में 1. बुध्दघोष की सर्वोत्कृष्ट रचना 2. विसुध्दिमग्ग और उसकी अट्ठकथाएं, जो पिटकों पर लिखी गयी हैं, आ जाती हैं, 3. आचार्य बुध्ददत्त और धर्मपाल की अट्ठकथाएं इसी युग में लंका में 1. महावंश 2. कच्चायन व्याकरण एवं आचार्य अनिरूध्द का प्रसिध्द ग्रन्थ 3. अभिधम्मत्थ संग्गहों आदि रचनाएं भी लिखी जाती हैं।

(ग) बुध्दघोष परवर्ती साहित्य – इसमें अट्ठकथा साहित्य पर टीकाएं, अनुटीकाएं चूलवंश सासनवंश आदि ग्रन्थों की गणना की जाती है।

2. बौध्द संस्कृत साहित्य –

बौध्द धर्म सम्बन्धी साहित्य केवल पालि भाषा में नही मिलता, संस्कृत, तिब्बती, चीनी आदि भाषाओं में मिलता है। पालि के समान ही संस्कृत में तीन पटक थे, परन्तु दुर्भाग्यवश वे सम्पुर्ण रूप में उपलब्ध नहीं हैं। चीनी और तिब्बती अनुवादों सं उनके अस्तित्व का ज्ञान होता है। संस्कृत में पालि निकायों के समान आगम थे जो दीर्घागम, मध्यमागम आदि नामों से प्रसिध्द थे। पालि अभिधम्मपिटक के समान ही संस्कृत में भी सात ग्रन्थ उपलब्ध थे, जिनका उल्लेख बौध्द संस्कृत साहित्य में मिलता है। कुछ ऐसा साहित्य भी प्राप्त होता है जिसमें हीनयान और महायान दोनों के सिध्दान्त मिलते हैं, ये ग्रन्थ संस्कृत और मिश्रित संस्कृत में लिखे हुए हैं – जिनका नामोल्लेख निम्नवत् है –

1. अभिधर्मकोश, भाष्य एवं व्याख्या।
2. अभिधर्म सार।
3. अभिधर्मामृत।
4. अभिधर्मदीप।
5. महावस्तु अथवा महावस्तु अवदान।
6. ललित विस्तर।
7. सन्दर्भ पुण्डरीक सुत्र।
8. अष्ट साहस्रिका प्रज्ञापारमिता।
9. अवदान शतक।
10. दिव्यादान।
11. निदान।
12. कल्पना मण्डितिका (कुमारलात)

13. चतु:शतक स्त्रोत्र।
14. मैत्रेय व्याकरण।
15. जातकमाला।
16. बुध्दचरित।
17. विज्ञप्तिमात्रसिध्दि
18. शिक्षा सुमच्चय
19. बोधिचर्यावतार
20. माध्यमिक शास्त्र
21. कर्मशतक
22. अवदान कल्पलता (क्षेमेन्द्रकृत) आदि

उक्त में से कुछ महत्वपुणे ग्रन्थों का परिचय संक्षिप्त रूप में निम्मिलिखित है –

अभिधर्मकोष –

अभिधर्मकोश आचार्य वसुबन्धु की रचना है। यह बौध्द धर्म का प्रख्यात एवं उपयोगी ग्रन्थ है। अभिधर्मकोश में वसुबन्धु ने बिना किसी भेदभाव के सौत्रान्तिक एवं वैभाषिक दोनों ही मतों को सरल एवं सुबोध शैली में प्रतिपादित किया है। इसमें नौ कोशस्थल हैं जो विषयक्रम में इस प्रकार हैं –धातु, इन्द्रिय, लोक, धर्म, अनुरूप, आर्यपुदगल, ज्ञान, ध्यान और पुदगलवाद।

अभिधर्मसार –

अभिधर्मकोश के पुर्व धमश्री आचार्य कृत अभिधर्मसार प्राप्त होती है जिस पर मदन्त धर्मपात्र ने अपना विस्तृत संस्करण लिखा था और जिस पर आचार्य वसुबन्धु ने व्याख्या लिखी थी। 'अभिधर्मसार' वैषिकी के मुख्य ग्रन्थों में से एक है।

अभिधर्मामृत –

यह रचना वर्तमान में चीनी भाषा से संस्कृत में लिखी गयी है। वस्तुत : यह रचना संस्कृत में लिखी गयी थी, इसके लेखक आचार्य घोषक माने जाते हैं।

महावस्तु या महावस्तु अवदान –

यह ग्रन्थ हीनयान और महायान के मध्य एक सेतु है। यह महासंधिक लोकोत्तरवादियों का विनयग्रन्थ है। महावस्तु में पाली महावग्गम की तरह बुध्द की जीवनी और संघ स्थापना का वर्णन प्राप्त होता है। महावस्तु के प्रारम्भ में ही बोधिसत्वों की चार चर्याओं का वर्णन मिलता है जिसे पुर्ण करना बोधिसत्व के लिए बुध्दत्व प्राप्त करने हेतु अनिवार्य कहा गया है। महावस्तु में भगवान को लोकोत्तर कहा गया है। महावस्तु भक्ति प्राधान्य ग्रन्थ है, इसका मुख्य उद्देश्य बुध्द के जीवन चरित को प्रस्तुत करना है।

ललित विस्तर –

ललित विस्तर महायान में अन्यतम श्रध्दा से पुज्य है, संभवत : यह ग्रन्थ पुर्व में सर्वास्तिवाद निकाय का ग्रन्थ रहा है। ललित विस्तर नव वैपुल्यों में से एक है। ग्रन्थ गद्य – पद्यमय है तथा गद्य के बीच – बीच में गाथाएं दी गयी है जो ग्रम्यगीत प्रस्तुत करती हैं तथा सुत्त निपात की तरह अतिप्राचीन हैं। भगवान बुध्द ने पृथ्वी पर जो लीला की थी इसमें उसका वर्णन होने से इसे 'ललित विस्तर' कहते हैं। ग्रन्थ में बुध्द का जन्म, असित ऋषि की कथा, बिम्बसारोंपसंक्रमण एवं 'मार – परिसंवाद' तथा धर्म – चक्र – प्रवर्तन आदि अंश बौध्द निकायों से मिलने के कारण इसकी प्राचीनता स्वयंसिध्द है। इसके अतिरिक्त कुछ नवीन अंश महायान मत को व्यक्त करते हैं। विशेषत : यह ग्रन्थ महायान का ग्रथ होते हुए भी हीनयान के सिध्दान्तों कर प्रतिपादन करता है।

बुध्दचरित –

आचार्य अश्वघोष ने इस ग्रन्थ की रचना की थी। यह ग्रन्थ सर्वास्तिवादी सिध्दान्तों तथा महायानी भक्ति भावना

से ओतप्रोत है। हम कह सकते हैं कि आचार्य अश्वघोष सर्वास्तिवादी होते हुए भी महायान के प्रभाव से बच न सका, उस समय महायान का प्रभुत्व विस्तृत हो रहा था, फिर भी हीनयान के साथ चल रहा था।

उल्लेखनी है कि 'मंजूश्रीमूलकल्प' रचना को छोडकर एक भी बौध्द ग्रन्थ भारत की सीमा के अन्दर प्राप्त नही हुआ। आज हम जिस बौध्द साहित्य का अध्ययन करते हैं वह हमें भारत के बाहर, लंका, बर्मा, नेपाल, तिब्बत के चैत्यों एवं विहारों तथा स्वस्याम से प्राप्त हुआ हैं। चीन और तिब्बत से प्राप्त सूचियों में उल्लिखित ग्रन्थों से हमें विशाल एवं समृध्द साहित्य के विस्तार के दर्शन होते हैं।